बिना कोई उत्तम शिक्षा निकले जो नाटक खेला गया इसका परिहासप्रिय फल

Vandana[1] Dr. Ishwar Singh[2]

[1]Research Scholar, CMJ University, Shillong

[2]Rtd. Associate Professor, Govt. P.G. College, Narnaul

----------♦----------

प्राक्कथन

बनारस में बंगालियों और हिन्दुस्तानियों ने मिलकर एक छोटा सा नाटक समाज दशाश्वमेध घाट पर नियत किया हैए जिसका नाम हिंदू नैशनल थिएटर है। दक्षिण में पारसी और महाराष्ट्र नाटक वाले प्रायः अन्धेर नगरी का प्रहसन खेला करते हैंए किन्तु उन लोगों की भाषा और प्रक्रिया सब असंबद्ध होती है। ऐसा ही इन थिएटर वालों ने भी खेलना चाहा था और अपने परम सहायक भारतभूषण भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र से अपना आशय प्रकट किया। बाबू साहब ने यह सोचकर कि बिना किसी काव्य कल्पना के व बिना कोई उत्तम शिक्षा निकले जो नाटक खेला ही गया तो इसका फल क्याए इस कथा को काव्य में बाँध दिया। यह प्रहसन पूर्वोक्त बाबू साहब ने उस नाटक के पात्रों के अवस्थानुसार एक ही दिन में लिख दिया है। आशा है कि परिहासप्रिय रसिक जन इस से परितुष्ट होंगे।

परिचय

मान्य योग्य नहिं होत कोऊ कोरो पद पाए।
मान्य योग्य नर तेए जे केवल परहित जाए ॥
जे स्वारथ रत धूर्त हंस से काक.चरित.रत।
ते औरन हति बंचि प्रभुहि नित होहिं समुन्नत ॥
जदपि लोक की रीति यही पै अन्त धम्म जय।
जौ नाहीं यह लोक तदापि छलियन अति जम भय ॥
नरसरीर में रत्न वही जो परदुख साथी।
खात पियत अरु स्वसत स्वान मंडुक अरु भाथी ॥
तासों अब लौं करोए करो सोए पै अब जागिय।
गो श्रुति भारत देस समुन्नति मैं नित लागिय ॥
साँच नाम निज करिय कपट तजि अन्त बनाइय।
नृप तारक हरि पद साँच बड़ाई पाइय ॥

साहित्य की समीक्षा

महन्त रू बच्चा गोवर्धन दास! कह क्या भिक्षा लायाघ गठरी तो भारी मालूम पड़ती है।
गोण दाण रू बाबा जी महाराज! बड़े माल लाया हूँए साढ़े तीन सेर मिठाई है।
महन्त रू देखूँ बच्चा! ;मिठाई की झोली अपने सामने रख कर खोल कर देखता हैद्ध वाह! वाह! बच्चा! इतनी मिठाई कहाँ से लायाघ किस धर्मात्मा से भेंट हुईघ
गोण दाण रू गुरूजी महाराज! सात पैसे भीख में मिले थेए उसी से इतनी मिठाई मोल ली है।
महन्त रू बच्चा! नारायण दास ने मुझसे कहा था कि यहाँ सब चीज टके सेर मिलती हैए तो मैंने इसकी बात का विश्वास नहीं किया। बच्चाए वह कौन सी नगरी है और इसका कौन सा राजा हैए जहां टके सेर भाजी और टके ही सेर खाजा हैघ
गोण दाण रू अन्धेरनगरी चौपट्ट राजाए टके सेर भाजी टके सेर खाजा।

सामग्री और विधि

ऐसी नगरी में रहना उचित नहीं हैए जहाँ टके सेर भाजी और टके ही सेर खाजा हो।
रू सेत सेत सब एक सेए जहाँ कपूर कपास।
ऐसे देस कुदेस में कबहुँ न कीजै बास ॥
कोकिला बायस एक समए पंडित मूरख एक।
इन्द्रायन दाड़िम विषयए जहाँ न नेकु विवेकु ॥
बसिए ऐसे देस नहिंए कनक वृष्टि जो होय।

रहिए तो दुख पाइयेए प्रान दीजिए रोय ॥

दो पैसा पास रहने ही से मजे में पेट भरता है। मैं तो इस नगर को छोड़ कर नहीं जाऊँगा। और जगह दिन भर मांगो तो भी पेट नहीं भरता। वरंच बाजे बाजे दिन उपास करना पड़ता है। सो मैं तो यही रहूँगा।

महन्त रू देख बच्चाए पीछे पछतायगा।

गोण दाण रू आपकी कृपा से कोई दुःख न होगाय मैं तो यही कहता हूँ कि आप भी यहीं रहिए।

सारांश

ऐसी अन्धेरनगरी में हजार मन मिठाई मुफ्त की मिलै तो किस काम कीघ यहा एक छन नहीं रहिए। मैं तो इस नगर में अब एक क्षण भर नहीं रहूंगा। देख मेरी बात मान नहीं पीछे पछताएगा। मैं तो जाता हूंए पर इतना कहे जाता हूं कि कभी संकट पड़ै तो हमारा स्मरण करना।

गोण दाण रू प्रणाम गुरु जीए मैं आपका नित्य ही स्मरण करूँगा। मैं तो फिर भी कहता हूं कि आप भी यहीं रहिए।महन्त जी नारायण दास के साथ जाते हैंय गोवर्धन दास बैठकर मिठाई खाता है।

संदर्भ ग्रथं

आधार ग्रन्थ

अरविन्द तिवारी : दीया तले अंधेरा, प्रतिभा प्रतिष्ठान, नेता जी मार्ग, नई दिल्ली – 1997

उषा यादव : कितने नीलकंठ, आत्माराम एंड संस, दिल्ली – 1998

उषा यादव : धूप का टुकड़ा, आत्माराम एण्ड सन्स प्रकाशन, दिल्ली–1995

उषा यादव : आंखों का आकाश, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली – 1995

कृष्णा अग्निहोत्री : टपरेवाले, साहित्य भारती प्रकाशन, कृष्ण नगर, नई दिल्ली, प्र॰ सं॰ – 1998

प्रो॰ के॰ एल॰ कमल : स्वातन्त्र्योत्तर भारत : विश्वासघात, पंचशील प्रकाशन, जयपुर – 2005

खड़क सिंह रावत : सत्ता के केन्द्र, कमल नन्दा, इन्दिरा नगर, लखनऊ, प्र॰ सं॰ – 2005

गुरुदत्त : यात्रा का अन्त, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नयी दिल्ली, प्र॰ सं॰ – 1973

दीपचन्द्र निर्मोही : और कितने अंधेरे, श्याम पुस्तक सदन, केशव पुरम, दिल्ली – 1995

दूधनाथ सिंह : आखिरी कलाम, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली – 2003

देवेश ठाकुर : अपना–अपना आकाश, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र॰ सं॰ – 1984

धीरेन्द्र अस्थाना : समय एक शब्द भर नहीं है, राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज, नयी दिल्ली – 1981

नरेन्द्र कोहली : अभिज्ञान, राजपाल एण्ड सन्स, नई दिल्ली – 2000

नरेन्द्र कोहली : अंतराल (महासमर – 5), वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली – 2000

नरेन्द्र कोहली : अधिकार (महासमर – 2), वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, प्र॰ सं॰ – 1991

निर्मल वर्मा : रात का रिपोर्टर, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नयी दिल्ली, प्र॰ सं॰ – 1989

पंकज बिष्ट : लेकिन दरवाजा, राधा कृष्ण प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली – 1996

प्रदीप पंत : महामहिम, राजकमल प्रकाशन प्रा॰ लि॰, दिल्ली, प्र॰ सं॰ – 1980

बालशौरि रेड्डी : कालचक्र, आलेख प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र॰ सं॰ – 2002

बालशौरि रेड्डी : दावानल, स्मृति प्रकाशन, इलाहाबाद, प्र॰ सं॰ – 1979

मनमोहन सहगल : समझौते से पहले, राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज, नयी दिल्ली, प्र॰ सं॰ – 2003

मन्नू भण्डारी : महाभोज, राधाकृष्ण प्रकाशन, दरियागंज, नयी दिल्ली, प्र॰ सं॰ – 1979

मुद्राराक्षस : शान्तिभंग, साहित्य भारतीय प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्र॰ सं॰ – 1982

मैत्रेयी पुष्पा : चाक, राजकमल प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, प्र॰ सं॰ – 1997

मैत्रेयी पुष्पा : विजन, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नई दिल्ली, प्र॰ सं॰ – 2002

मैत्रेयी पुष्पा : अगनपाखी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली,

प्र॰ सं॰ – 2001